



रसोईघर

छात्र इस कविता के द्वारा रसोईघर में प्रयुक्त कुछ वस्तुओं के हिंदी शब्दों के प्रयोग से परिचित होंगे।

आज रसोईघर की खिड़की,
मुन्ना-मुन्नी खोल रहे हैं।
अंदर देखा, चकला-बेलन,
चाकू-छलनी बोल रहे हैं।

मैं चाकू, सब्जी-फल काटूँ,
टुकड़ा-टुकड़ा सबको बाँटूँ।
गाजर-मूली प्याज़-टमाटर,
छीलो काटो रखो सजाकर।

गोल चाँद-सी हूँ मैं थाली,
बज सकती हूँ बनकर ताली।
मुझमें रोटी-सब्जी डाली,
और सभी ने झटपट खा ली।



शब्दार्थ :

छलनी - जालीदार उपकरण, सब्जी-तरकारी, छीलना-छिलका
निकालना, झटपट - तुरंत, तत्क्षण।